जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५५ वे ❖ अंक २ व ३ ❖ ऑक्टोबर-नोव्हेंबर २०२३ ❖ वीर संवत २५४९ ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात

या अंकात	पान नं.
● दीपावली पूजन विधी	२३
● दीपावली का पावन सन्देश	२९
● प्रकाश के प्रसार का पर्व : दीपावली	३३
● गौतम प्रतिपदा आई है, गौतम का अनुसरण करें	४३
● पाण्याची Expire Date काय असते ?	४६
● भगवान महावीर : बोध कथाएँ	४७
● सुक्ति से मुक्ति : कवि	५४
● दीपावली - आत्म ज्योति का जागरण पर्व	५५
● ''परस्परोपग्रहो जीवनाम्'' और जैन जीवन शैली	६७
● अपरिग्रह	७३
● साहस ही लाता है सफलता	७५
● प्रकृति के तीन कडवे नियम जो सत्य है	७९
● नफरत V/S प्यार	८०
● निश्चय सम्यकत्व की यात्रा	८१
● मोक्ष मार्ग के २१ कदम : क्रोध	९१
● अनुठा भारत चार छंद	१०२
● श्रमयोगी श्रावक : पुनिया	१०३
● जादुई दर्पण	१०४
● किंमत एकीला असते एकाला नाही	१०५
● स्वच्छ दिमाग अभियान	११५
● ऐसी हुई जब गुरुकृपा	११९
● जैन संप्रदाय तुलनात्मक तालिका २०२३	१२३
● बिन जाने कित जाऊँ - प्रश्नोत्तरी प्रवचन	१२७
● ज्ञान और सदबुद्धि के दिपक प्रज्वलीत करे	१३९
● ध्यान की उपयोगिता	१४०
● प्रेम की मीठी नजर, मिटे द्वेष का जहर	१४१
● वैराग्य वाणी	१४४
● मंत्राधिराज प्रवचन सार	१४७
● भल्या पहाटेचे अभ्यंग स्नान	१५०
● चार संप्रेरके जी माणसाला आनंदी ठेवते	१५१
● बोथरा परिवार सम्मेलन, पुणे	१५६
● भवानी माताजी जैन मंदिर ट्रस्ट, पुणे	१५८
● आनंदऋषिजी हॉस्पिटल - अहमदनगर	१५९
● श्री आचार्य हर्षसागरजी म.सा.	१६०

- राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न, पुणे १६३
- Education Loan १६४
- आनंद पार्श्व गुरुकुल, अहमदनगर १६६
- सुर्यदत्त एज्युकेशन फाऊंडेशन, पुणे १६७
- जैन चेअर, देणगी – पुणे १६८
- उवसग्गहर स्तोत्र पठन, पुणे १६९
- राजस्थान प्राकृत अकादमी १७१
- सुर्यदत्त गांधीयान अॅवार्ड – पुणे १७२
- श्री. राजेंद्रजी बाठिया – निवड १७३
- श्री. पनालाल संचेती, पुणे १७५
- श्री. सुनिल खाबिया, मुंबई – उपाध्यक्ष १७५
- श्री. वालचंदजी संचेती, पुणे – निवड १७७
- वर्धमान एज्युकेशन इंस्टिट्युट, पुणे १७९
- डॉ. अमोल बोरा, पुणे – एकसष्ठि १८१
- सत्यम सुराणा, लंडन – राष्ट्रध्वज प्रेम १८३
- महाराष्ट्र राज्य व्यापारी परिषद, पुणे १८४
- श्री. भगवानदास सुंगधी, पुणे – रेकॉर्ड १८५
- सुनील कटारिया, पाथर्डी १८७
- समंजस वृध्दत्व १९१
- सौ. सुषमा लुणावत – पुरस्कार १९२
- मोबाईल एक नशा १९३
- हास्य जागृति १९५
- नव वर्ष की प्यास १९६
- ऐसा हो मेरा व्यवहार १९९
- स्वर्ग सा बन जाए घर–संसार १९९
- सुरक्षा : प्रत्येक मार्ग पर सब मेरे ही है २०१
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत १०० रुपये.

- Google Pay - M. 9822086997

(+ १ वर्षासाठी रजिस्टर पोस्टाने अंक मिळवण्यासाठी रु. ३००/– Extra)

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay - M. 9822086997/
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA ● Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 ● IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे–सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

दीपावली पूजन विधी

मनुष्य के जीवन में उत्सवों का बड़ा महत्त्व है । उन पर्वों में दीपावली पर्व भारत वर्ष का एक श्रेष्ठतम पर्व है । दीपावली दीपोत्सव का, प्रकाशोत्सव का पर्व है । शक्ति, भक्ति और श्रध्दा का पर्व है । दीपक की शुभ ज्योति हमें ऊर्ध्वगमन का शुभ संदेश देती है, साथ ही अपने सान्निध्य में आनेवाले हर दीप को ही नहीं हर बुझे दीप को भी प्रकाशित करने का संदेश देती है । दीप से दीप जलते जाते हैं और दीपमाला बनकर दीपावली बन जाती है ।

यह पर्व मानव जीवन की पूर्णता और उसकी सार्थकता को जानने-समझने का पर्व है । हमारे भीतर अज्ञान का तमस छाया हुआ है, जो ज्ञान के प्रकाश से ही मिट सकता है । ज्ञान ही संसार में सबसे बड़ा एवं सर्वश्रेष्ठ प्रकाश है । जब ज्ञान का दीप जलता है, तब भीतर और बाहर दोनों ओर आलोक जगमगाता है ।

प्रभु महावीर के इस निर्वाण पर्व दीपावली के उपलक्ष में हम अहिंसा के दीप जलाये, मैत्री का प्रकाश फैलाये और आपस में प्रेमभाव बढ़ाने का प्रयास करें ।

जैन समाज में इस त्योहार का विशेष महत्त्व इसलिए है कि इसी दिन अमावस्या को भगवान महावीर स्वामी का निर्वाण हुआ था । वे जन्म-मृत्यु के दुखों से मुक्त होकर मोक्ष गामी हुए । चतुर्दशी और अमावस्या ये दो दिन लगातार भ. महावीर स्वामी जनसमुदायों को अंतिमदेशना (उपदेश) देते रहे । वह उपदेश ही उत्तराध्ययन सूत्र है । जिसका पठन-पाठन श्रवण इन दिनों में किया जाता है । कई महानुभाव बडी श्रध्दा के साथ उपवास करते है । भ. महावीर का जाप करते हैं । पौषध के साथ उपवास करते हैं ।

कार्तिक सूद प्रतिपदा के दिन प्रथम गणधर गौतमस्वामीजी को केवलज्ञान प्राप्त हुआ । नए वर्ष के प्रात:काल में गौतमस्वामीजी का जाप किया जाता है । सभी भक्त जन सुबह गुरु भगवंतों के मुखारविंद से शुभ मांगलिक श्रवण करते है । मंत्र गर्भित स्तोत्र का श्रवण करते हैं। इसके बाद ही अपने कार्य का प्रारंभ करते हैं ।

दीपावली त्योहार हमारे लिए एक महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक त्योहार है । – संपादक

दीपावली पूजन विधी

सर्व प्रथम घर के सभी सदस्य मंगलभावना के साथ तीन बार नवकार महामंत्र का भक्तिसे भर कर उच्चारण करे ।

नवकार महामंत्र

णमो अरिहंताणं, णमो सिध्दाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं,
एसो पंच णमोक्कारो, सव्वपावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ।।

तीर्थंकरों को वंदन

समवशरण का स्मरण कर पूर्व और उत्तर दिशा के बीच ईशान्य दिशा में महाविदेह क्षेत्र है वहाँ बीस विहरमान तीर्थंकर वर्तमान में विराजमान है अत: अत्यंत भावपूर्ण हृदय से उन्हें तीन बार वंदन नमन करें ।

गुरु भगवंत को वंदन

जो गुरु आपने माने हैं उन्हें श्रध्दापूर्वक वंदना करना ।

- शुभ मुहूर्त पर गद्दी या गालीचा बिछाकर भ. महावीर स्वामीजी, श्री गौतम स्वामीजी, श्री लक्ष्मी देवी, श्री सरस्वती देवी के फोटो पूर्व या उत्तर दिशा में रखें।
- गद्दीपर नई बहियाँ (नोट बुक), बिल बुक, चेक बुक, सुवर्ण-चांदी या धातु के देवी देवताओं के सिक्के, नया पेन पूजा की सामग्री रखें ।
- पूजा के लिए साहित्य - खाने के पान डंढल सहित,

।। ॐ अर्हम् नमः ।।

श्री

श्री श्री

श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

श्री शुभ 卐 श्री लाभ

श्री आदिनाथाय नमः श्री शांतिनाथाय नमः

श्री पार्श्वनाथाय नमः श्री महावीराय नमः

श्री सद्गुरूभ्यो नमः

श्री गौतमस्वामी की लब्धि, श्री भरतजी की ऋध्दि, श्री अभयकुमारकी बुध्दि, श्री कयवन्नाजी का सौभाग्य, श्री धन्ना शालिभद्रजीकी संपत्ति, श्री बाहुबलीजीका बल, तथा श्री श्रेयांसकुमार की दानवृत्ती प्राप्त होवे !

श्री जिनशासन की प्रभावना होवे !

।। श्री सरस्वती देवी नमः ।। श्री महालक्ष्मी देवी नमः ।।

नूतन वर्ष

वीर संवत २५५०, विक्रम संवत २०८०

कार्तिक सुद १ मंगळवार दि. १४ नोव्हेंबर २०२३

पूजन दिन रविवार दि. १२ नोव्हेंबर २०२३

卐

सुपारी, लौंग, इलायची, कुंकुम, वासक्षेप, अक्षदा (चावल), श्रीफल (नारियल), फूल, घी का दीया, धूप, अगरबत्ती, जल, फल (Fruit), ईख (Sugar cane), नैवद्य (मिठाई), लक्ष्मी (झाडु), लाभ (लाह्या) बत्तासा, मोली, आरती के लिए कपूर।

- पूजा करनेवाला घर का मुखिया तीन नवकार मंत्र का जाप करके हाथ में मोली बाँधे । फोटो, सिक्के इनको तिलक लगाएँ अक्षदा चढावे ।
- गद्दी की दाहिनी तरफ घी का दीया और बायीं तरफ धूप अगरबत्ती लगाएँ । और साईड में ईख (Sugar cane) खडा रखें ।
- नवकार मंत्र बोलते-बोलते पेन, दीया, कलश, लक्ष्मी, ईख (Sugar cane) इ. को मोली बांधे । कुंकुम से तिलक करें ।
- नई बही के पहले पन्नेपर बाजु की चौकट का मायना लिखें ।

लिखने के बाद कुंकुम से स्वस्तिक निकालें । नई बहियाँ पिछले वर्ष की अकाऊंट की एक बही, बिल बुक, चेक पुस्तक, लक्ष्मी इ. सभीपर डंढल सहित एक पर एक दो पान रखें । उसपर एक रुपया और उसपर सुपारी, लौंग, इलायची रखें । हाथ में पानी लेकर बही के चारों ओर घुमावे । वासक्षेप, कुंकुम मिश्रित चावल के दाने हाथ में लेकर निम्न श्लोक और मंत्र बोलें ।

मंगलं भगवान वीरो, मंगलं गौतम प्रभुः ।
मंगलं स्थूलीभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।
मंत्र - ॐ आर्यावर्ते, आस्मिन् जंबूद्वीपे दक्षिणार्धभरते भरतक्षेत्रे-भारतदेशे (पूना) नगरे ममगृहे श्री शारदा देवी, श्री लक्ष्मीदेवी आगच्छ आगच्छ, तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।

अक्षदा बहीपर अर्पण करें । बाद में निम्नलिखित स्तुति का पठन करें ।

।। स्तुती ।।

स्वश्रीयं श्रीमद् अरिहंता, सिद्धः पुरीपदम्,
आचार्यः पंचधाचारं, वाचकां वाचनांवराम्।
साधवः सिद्धी साहाय्यं वितन्वन्तु विवेकिनाम्,

मंगलानां च सर्वेषां, आद्यं भवति मंगलम् ।
अर्हमित्यक्षरं माया, बीजं च प्रणवाक्षरम्,
एवं नाना स्वरूपं च, ध्येयं ध्यायन्ति योगिनः।
हृत्पदं षोडशदलं, स्थापितं षोडशाक्षरम्
परमेष्ठिस्तुते बीजं, ध्यायेक्षरदूरदं मुदा ।
मंत्रणामादिमं मंत्रं, तंत्र विघ्नौघ निग्रहे,
ये स्मरन्ति सदैवेनं, ते भवन्ति जिन प्रभा ।।

तत्पश्चात् निम्नलिखित मंत्र जप करते-करते **जल, चंदन, पुष्प (फूल), धूप, दीप, अक्षदा (चावल), फल, नैवेद्य** इन आठ वस्तुओं से वही पूजन करें ।

ॐ ऱ्हीं श्री भगवत्यै, केवलज्ञान स्वरूपायै, लोकालोक प्रकाशिकायै, सरस्वत्यै, लक्ष्मयै (जलं) समर्पयामि स्वाहा ।

दूसरी बार यही श्लोक बोलते हुए जल की जगह चंदन बोले इस प्रकार आठों ही वस्तुओं के नाम लेकर आठ बार यह श्लोक बोलें ।

पूजा में सभी सदस्य खडे होकर निम्नलिखित प्रार्थना बोलें ।

।। श्री सरस्वती स्तोत्र ।।

सकल लोक सुसेवित पंकजा
वर यशोर्जित शारद कौमुदी,
निखिल कल्मष नाशन तत्परा
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
कमल गर्भ विराजित भूधना,
मणि किरीट सुशोभित मस्तका,
कनक कुंडल भूषित कर्णिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
वसुहरिद् गज संस्नपितेश्वरी
विधृत सोमकला जगदीश्वरी,
जलज पत्र समान विलोचना
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
निज सुधैर्य जितामर भूधरा,
निहित पुष्कर वृंदल सत्कारा
समुदितार्क सदृतनु बल्लिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।
विविध वांछित कामदुधाद्भूता,
विशद पद्म हृदान्तर वासिनी
सुमति सागर वर्धन चंद्रिका,
जयतु सा जगतां जननी सदा ।।

।। श्री लक्ष्मी स्तोत्र ।।

नमोस्तुते महालक्ष्मी महासौख्य प्रदायिनी
सर्वदा देही मे द्रव्यं, दानाय मुक्ती हेतवे ।। १ ।।
धनं धान्य धरां हर्ष, कीर्तिम्, आयुः यशः श्रियम्
वाहनाम् दन्तिन् पुत्रान, महालक्ष्मी प्रयच्छ मे ।।२।।
यन्मया वांछितं देवी, तत्सर्वं सफलं कुरू
न बान्ध्यन्ता कुकर्माणि, संकटान्मे निवारय ।।३।।

।। प्रार्थना ।।

सुंदर आरोग्य निवास करे दृढ तन में ।
आशा, उत्साह, उमंग भरे शुचि मन में ।
न हो अनुचित योग प्रयोग धन साधन में ।
उत्कृष्ट उच्च आदर्श जगे जीवन में ।
तम मिटे, ज्ञानकी ज्योति जगत में छाये ।
प्रभु ! दिव्य दिवाली भव्य भाव भर लाये ।

इसके बाद एक थाली में दीया लेकर कपूर से आरती करे - निम्न आरती बोले ।

।। आरती ।।

सकल जिनंद नमी करी, जिनवाणी मन लाय ।
सरस्वति लक्ष्मी करू आरती, आतम सुगुरू पसाय ।।
ज्ञान जगत में सार हैं । ज्ञान परम हितकार ।
ज्ञान सूर्य से होता है, दुरित तिमिर अपहार ।।
श्री सरस्वती प्रभाव से, लहे जगत सम्मान ।
ज्ञान बिना पशु सारिखा, पावे अति अपमान ।।
श्रद्धा मूल क्रिया कही, ज्ञान मूल है तास ।
पावे शिव सुख आतमा, इससे अविचल वास ।।
अष्टमपद विशति पदे, सप्तम नवपद ज्ञान ।
तीर्थंकर पदवी लहे, आराधक भगवान ।।

आरती के बाद निम्नलिखित अष्टदोहे बोले ।

।। अष्टदोहे ।।

अंगुष्ठे अमृत वसे लब्धितणा भंडार ।
जय गुरू गौतम समरिये, वांछित फल दातार ।।१।।
प्रभू वचने त्रिपदी लही, सूत्र रचे तेणीवार ।
चऊदह पूरब माँ रचे, लोकालोक विचार ।।२।।

भगवति सूत्र कर नमी, बंभी लिपि जयकार ।
लोकलोकोत्तर सुख भणी, वाणी लिपी अढार ।।३।।
वीर प्रभू सुखिया थया, दिवाली दिन सार ।
अंतर महूरत तत्क्षणे, सुखिया सहू संसार ।।४।।
केवलज्ञान लहे सदा, श्री गौतम गणधार ।
सुरनर पर्षदा आगले घट अभिषेक उदार ।।५।।
सुरवर पर्षदा आगले, भाखे श्री श्रुतनाण ।
नाण थकी जग जाणिये, द्रव्यादिक चौठाण ।।६।।
ते श्रुतज्ञान ने पुजिये, दीप धूप मनोहार ।
वीर आगम अविचल रहो, वर्ष एकवीस हजार ।।७।।
गुरू गौतम अष्टक कही, आणि हर्ष उल्लास ।
भाव भरी जे समरशे, पुरे सरस्वती आस ।।८।।

।। लोगस्स (चउव्वीसत्थव) का पाठ ।।

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे ।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली ।।१।।
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमइं च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ।।२।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयल सिज्जंच वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ।।३।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं चं।
वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वध्दमाणं च ।।४।।
एवं मए अभित्थुआ, विहुयरयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा. तित्थयरा मे पसीयंतु ।।५।।
कित्तियवंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ।।६।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागरवरगंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ।।७।।

।। नमोत्थुणं का पाठ ।। (२ बार)

नमोत्थुणं अरिहंताणं, भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं, संय-संबुध्दाणं, परिसुत्तमाणं पुरिस-सीहाणं, पुरिस-वर-पुण्डरीयाणं, पुरिसवरगंध-हत्थीण, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मणायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं दीवोत्ताणं, सरणगइपइट्ठाणं, अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं, विअट्टछउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं, सिव-मयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणराविति-सिद्धिगइ-नामधेयं ठाणं संपत्ताणं नमो जिणाणं जियभयाणं।

(दूसरे में - ठाणं संपाविउकामाणं णमो जिणाणं जियभयाणं)

(तिसरे में) णमोत्थुणं मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसयस्स अणेगगुण संजुत्तस्स जाव संपविउ कामस्स ।

।। मंगलपाठ ।।

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं । चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो । चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते-सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे-सरणं पव्वज्जामि, साहू-सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तधम्मं सरणं पव्वज्जामि। अरिहंतो का शरणा, सिद्धों का शरणा, साधुओं का शरणा, केवलिप्ररुपित दयाधर्म का शरणा। चार शरणा, दुर्गति हरणा और शरणा नहीं कोय, जो भवी प्राणी आदरे तो अक्षय अमरपद होय ।

अंगुष्ठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार ।
श्रीगुरु गौतम सुमरिये, मनवांछित फलदातार।
भावे भावना भाविये, भावे दीजे दान ।
भावे धर्म आराधिये, भावे केवलज्ञान ।
पावे पद निर्वाण ।।

यहाँ दीपावली विधि संपन्न होती है । •

दीपावली का यह दिन भगवान महावीर का निर्वाण दिन है अत: भगवान के फोटो के सामने बैठकर तन-मन को एकाग्र कर, रात्री में निम्न जप की २०-२० मालाएँ जपें ।

ॐ ऱ्हीं श्री महावीर स्वामी सर्वज्ञाय नम:
बादमें
ॐ ऱ्हीं श्री महावीर स्वामी पारंगताय नम:
की मालाएँ गिनें अथवा यथाशक्ति जाप करें।
कार्तिक सूद प्रतिपदा की सूर्योदय से पूर्व स्नानादि के बाद नमस्कार महामंत्र का जप करें और
ॐ ऱ्हीं श्री गौतमस्वामी केवलज्ञानाय नम:
२० माला फेरें ।
फिर यह प्रार्थना बोले...

कुंदिंदुगोखीर तुसार वन्ना
सरोज हत्था कमले निसन्ना
वाएसिरी पुत्थय वग्ग हत्था
सुहायसा अम्ह सया पसथ्था

इस प्रार्थना के बाद विद्या संपदा का महान ओजस्वी मंत्र का अवश्य जप करें (२० माला)

ॐ ऱ्हीं ॐ

जैन मंदिर या स्थानक, उपाश्रय में जाकर प्रभु का, संतों का दर्शन करें । मांगलिक श्रवण करें । गौतम स्वामी को मध्यरात्री के बाद भली सुबह केवलज्ञान प्राप्त हुआ अत: उस समय 'गौतम रास' अवश्य गावें ।

दीपावली की इस विधि का यथायोग्य पालन करें। सबका भला हो, मंगल हो, कल्याण हो । •

सन २०२३ चे दीपावली पूजनाचे मुहूर्त

❖ **पुष्प नक्षत्र : अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद ७**
शनिवार दि. ४-११-२०२३ : * सकाळी ८.३० ते ९.०० शुभ * दुपारी १२.३० ते २ चल,
* २.०० ते ३.३० लाभ, * ३.३० ते ५.०० अमृत
* सायंकाळी ६.३० ते ८.०० लाभ * रात्री ९.३० ते ११.०० शुभ
रविवार दि. ५-११-२०२३ : * सकाळी ८.०० ते ९.३० चल * ९.३० ते १०.३० लाभ

❖ **धनत्रयोदशी : (धनतेरस) अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद १३**
शुक्रवार दि. १०-११-२०२३ : * दुपारी १२.४० ते २.०० शुभ
* सायंकाळी ५.०० ते ६.३० चल, रात्री ९.३० ते ११.०० लाभ
शनिवार दि. ११-११-२०२३ : * सकाळी ८.०० ते ९.०० शुभ

❖ **महालक्ष्मी पूजन (दीपावली वही पूजन) : अश्विन (मारवाडी मिती कार्तिक) वद ३०**
रविवार दि. १२-११-२०२३ : * दुपारी २.४५ ते ३.३० शुभ, सायंकाळी ६.३० ते ८.०० शुभ
* ८.०० ते ९.३० अमृत, ९.३० ते ११.०० चल.
* वृषभ लग्न कुंभ नवमांश - सायंकाळी ६.२४ ते ६.३५
* वृषभ लग्न वृषभ नवमांश - सायंकाळी ७.०१ ते ७.१४

❖ **नूतन वर्ष : (वीर संवत २५५०, विक्रम संवत २०८०) कार्तिक शुध्द १**
मंगळवार दि. १४-११-२०२३ : * सकाळी ९.३० ते ११ चल * ११.०० ते १२.३० लाभ
* दुपारी १२.३० ते २.०० अमृत

श्री शुभम् भवतु !

प्रेषक : नवीनकुमार बी. शहा - २३० पाटील प्लाझा, मित्र मंडळ चौक, पुणे ९. मो. ९८२२०९०३३९

दीपावली का पावन सन्देश

लेखकः राष्ट्रसंत श्री गणेश मुनि शास्त्री

पारस पत्थर की समदर्शिता कितनी विलक्षण है। अपने स्पर्श मात्र से लोहे को स्वर्ण बना देना पारस का असाधारण गुण है। लोहा कुधातु है। रंग-रूप में काला और मूल्य में साधारण । कहते हैं लोहे में शनि का वास है। दूसरी ओर सोना अच्छे रंग-रूप वाला होने के कारण स्वर्ण कहलाता है। अपने जन्म से ही रूपवान होने के कारण इसे जात रूप भी कहते हैं। अपनी चमक-दमक के कारण सोना कुंदन और अत्यधिक मूल्यवान होने के कारण कंचन कहलाता है। सोने की चाह धरती के मानव से लेकर स्वर्ग के देवों तक है। रावण की लंका सोने की थी। सीता जी सोने के मायावी मृग के कारण ही छली गई थीं।

पारस का स्पर्श गुण

पारस स्वयं में एक पत्थर है। किन्तु उसमें यह विशिष्ट गुण है कि अपने स्पर्श से लोहे को सोना बना देता है। उसमें दूसरा गुण है समभाव का। महाकवि सूरदास ने अपनी कविता की भाषा में कहा है-

इक लोहा पूजा में राखत,
एक घर बधिक परो ।
पारस गुन अवगुन नहिं चितवत -
कंचन करत खरो ।।

अर्थात एक लोहा तो छुरे के रूप में कसाई के घर रहता है और एक मन्दिर में लेकिन पारस पत्थर अपने स्पर्श से दोनों को खरा-विशुद्ध स्वर्ण बना देता है। कसाई के छुरे का लोहा हिंसा की क्रिया करता है पर पारस उसके इस अवगुण पर ध्यान नहीं देता।

पारस ने कसाई का छुरा जो लोहे का था, उसे सोने का बना दिया, पर सोने का बनकर भी वह छुरा ही तो बना रहा। जीवों के वध का जो काम लोहे का छुरा करता था, वही काम अब सोने का छुरा करेगा। छुरे की आकृति नहीं बदली, वह छुरा ही रहा और उसका कार्य भी पूर्ववत् जीवों का वध करना ही रहा। इसी पर सन्त कवि गोस्वामी तुलसीदास ने भी कहा है-

ज्यों पारस के परस तें, कंचन भई तलवार ।
''तुलसी'' तीनों नहीं गये, धार मार आकार ।।

दीपक : पारस से ऊपर

दूसरी ओर दीपक को लें। दीपक का गुण पारस से बहुत आगे और अत्यधिक विशिष्ट है। दीपक अन्धकार का हरण करता है। अन्धकार दो हैं- एक बाहर का और दूसरा भीतर का। भीतर का अन्धकार अज्ञान, मिथ्यात्व और भ्रान्त धारणा कहलाता है। ज्ञानदीप भीतर के अँधेरे को दूर करता है।

अँधेरे की अपनी कोई स्वतंत्र सत्ता नहीं है। प्रकाश की अपनी स्वतंत्र सत्ता है। अन्धकार का अर्थ है, प्रकाश का अभाव। दिन का अर्थ यह नहीं है कि रात का या अन्धकार का अभाव हैं; अपितु रात का अर्थ है, दिवाकर की अनुपस्थिति ।

धरती को स्वर्ग बनाने का पर्व

भीतर और बाहर के अन्धकार को मिटाने के अलावा दीपक की एक और विशेषता बड़ी अद्‌भुत है। जलता हुआ दीपक बुझे हुए दीप को जलाकर उसमें यह सामर्थ्य भी भर देता है कि वह दूसरे दीपों को भी जला दे। इस तरह दीप से दीप जलते जलते दीपों की एक माला बन जाती है और दीपों की वह माला दीपमालिका, दीपावली या दिवाली कहलाती है। दीपावली ज्योति पर्व है, यह ज्ञान-पर्व है और है धरती को स्वर्ग बनाने का पर्व । सच्चे अर्थों में तो दीपावली मुक्ति-पर्व है।

यों तो विश्व की विविध संस्कृतियों में दीपों का पर्व मनाया जाता है। इस्लाम धर्म में शबेबरात पर्व पर चिरागों और मोमबत्तियों की पंक्तियाँ सजाई जाती हैं। ईसाइयों में भी बड़े दिन की रात ज्योति पर्व के रूप में

मनाई जाती है, पर भारतीय धर्म-संस्कृति का अनुपम पर्व दीपावली एक विशेष रहस्य को प्रकट करने का प्रतीक पर्व है।

दीपावली पर्व वस्तुतः भारतीय संस्कृति की सजीव साकार पहचान है। यह पर्व मानव-जीवन की पूर्णता और उसकी सार्थकता को जानने-समझने और उसे बार-बार दुहराने का पर्व है। पाश्चात्य देशों ने बहुत भारी भौतिक उन्नति कर ली है। इतने अधिक भोग-साधन पाकर भी पाश्चात्य देशों के लोग आत्म-सुख और मन की शान्ति से कोसों कोस दूर हैं। ऐसे सभी लोगों को दीपावली सन्देश देती है-अन्तर का ज्ञान-दीप जलाकर पहले अपने भीतर का अज्ञान तिमिर मिटा दो। फिर सभी बुझे दीपकों को जला दो और अन्त में जन्म-मरण से मुक्ति की सिद्धि पाकर मानव-जीवन को सार्थक कर लो।

भारत के प्रसिद्ध संत स्वामी विवेकानन्द ने कहा है - ''बी गॉड ॲण्ड मेक गॉड।'' (Be God and make God.) अर्थात पहले स्वयं भगवान बनो सिद्धि को प्राप्त करो और फिर दूसरों को सिद्ध बनाओ।

समभाव की पराकाष्ठा : महावीर

आज से लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व सन्मति महावीर ने यही किया। उन्होंने अपने हृदय के दीप को जलाया और फिर अनगिनत बुझे हुए दीपों को ज्योतित किया तथा उनको इतनी सामर्थ्य भी दी कि वे ज्योतित दीप आज तक दूसरे बुझे दीपों को प्रज्वलित करते आ रहे हैं और उनसे प्रदीप्त दीप अनन्तकाल तक बुझे दीपों को ज्योति प्रदान करते रहेंगे। महावीर समभाव की पराकाष्ठा थे उन्होंने यह नहीं देखा कि बुझा हुआ दीप मिट्टी का है या सोने का। उन्होंने समभाव से सभी को ज्योति प्रदान की। वह बुझा हुआ दीप चाहे अर्जुनमाली जैसा कातिल हो, चाहे कोई छत्रधर राजा अथवा बन्दिनी चन्दना हो; उन्होंने सबको ज्योति दी। कार्तिक अमावस्या की घोर अँधेरी रात का दीपवाली पर्व भगवान महावीर की साधना यात्रा के अथ और इति का सजीव साकार और मानव-जाति को आत्म-साधना की प्रेरणा देने वाला पर्व है।

दीपावली धर्म का पर्व है, पूर्णता, मुक्ति अथवा जन्म-मरण की इतिश्री का पर्व है। इस पर्व का शुभारम्भ कब, क्यों और कैसे हुआ, इस पर एक दृष्टि डालना उचित होगा। इसका शुभारम्भ किसी साधारण मानव में नहीं, अपितु देवराज इन्द्र ने रत्न और मणियों के दीपों की अवली से करके इसे दीपावली की संज्ञा दी थी। इसके पीछे भी देवराज का चिन्तन यह था कि मिट्टी के दिए, रुई की बत्ती और तेल वाला दीपक दिए के टूटने, तेल समाप्त होने और हवा के झोंके से कभी भी बुझ सकता है, पर रत्न और मणियों के दीपों के बुझने की सम्भावना नहीं है।

आत्म-साधन की प्रेरणा : दीपावली

आज की दीपावली तो ढाई हजार वर्ष पूर्व की रत्न-मणि-दीपों की दीपावली की पुनरावृत्ति और स्मृति है। वस्तुतः जो ज्ञान-दीप महावीर मानवों के हृदय में जला गए हैं, वे दीप अखण्ड ज्योतित दीप हैं और उनके बुझने की संभावना तब तक नहीं है, जब तक हम मुक्ति-पर्व दीपावली से आत्म-साधन की प्रेरणा लेते रहेंगे। तो आइए देखें कि मुक्ति-पर्व दीपावली का शुभारम्भ कब, क्यों और कैसे हुआ ?

वर्धमान एक राजकुमार थे उनके जीवन में भौतिक समृद्धि की कोई कमी नहीं थी। दास-दासियाँ उनकी सेवा में लगी रहती थीं वे स्वर्ण-पात्रों में भोजन करते थे। उनके पथ में फूल बिछते थे। इतना होने पर भी वे जानते थे यह भौतिक समृद्धि उनके पुण्यों का बंधन है। राजसी ठाट-बाट उनको अमर-अखण्ड और अविनाशी सुख नहीं दे सकते। वर्धमान महावीर सोचा करते थे-इन्द्रियों से प्राप्त बाहरी भौतिक सुखों में चार दोष हैं। पहला यह कि इनमें पराधीनता है। ये सुख अपने से भिन्न साधनों पर निर्भर है। दूसरा दोष हृदयहीनता का है। यदि मैं अच्छा भोजन करूँगा तो दूसरे को उस भोजन से वंचित करना पड़ेगा, यह इन्द्रियोगों की हृदयहीनता है। तीसरा दोष जड़ता और खण्डता का है। मिठाई खाते-खाते ऊब होने लगती है। एक स्थिति

ऐसी आती है कि मिठाई का अन्तिम खण्ड अच्छा नहीं लगता। यह जड़ता हुई। एक दिन मिठाई से तृप्त होने के बाद दूसरे दिन पुनः मिठाई खाने की इच्छा होती है- तृप्ति स्थायी नहीं रहती, यह खण्डता का दोष है। चौथा दोष प्रमाद का है। सुख की अनुभूति का कारण मिठाई की इच्छा हटने का है और दिखाई यह देता है कि सुख मिठाई में है। मुझे तो ऐसा सुख प्राप्त करना है जो इन सभी दोषों से मुक्त अखण्ड और एकरस हो। यह सुख आत्मा का अपना स्वाधीन सुख है। जीवनकाल में यह मन की शान्ति है और मरने के बाद मोक्ष है।

भगवान महावीर के सामने पहली समस्या अपनी थी और दूसरी समस्या समाज में व्याप्त अज्ञान की थी। पूरा समाज मिथ्यात्व के अंधकार में डूबा था। धर्म के नाम पर अधर्म फैला था। हिंसा का बोलवाला था। ऊँच-नीच का भेद व्याप्त था। स्त्रियाँ बेची और खरीदी जाती थीं। महावीर ने पहले स्वयं साधना करके समाज को बदलने का निश्चय किया।

दीपावली का अभ्युदय

राजवैभव को ठोकर मारकर वे अणगार बने। वर्षों तक जंगलों में रहकर कठोर साधना की उपसर्ग और परीषहों को समभाव से सहन करके कर्मों का क्षय करके केवलज्ञान और केवलदर्शन प्राप्त किया। उन्होंने कैवल्य का दीप प्रज्वलित किया अपने हृदय में। इस प्रकार स्वयं प्रकाशित होने के बाद दूसरे लोगों मुमुक्षुओं को प्रकाशित किया। धर्म के चार तीर्थ अथवा घाट उन्होंने बनाये। गृहस्थों के लिए श्रावक और श्राविका तथा विरक्तों के लिए श्रमण और श्रमणी । राजा-रंक, चोर-डाकू सभी के हृदय का ज्ञान-दीप जलाकर उन्होंने अपने श्रमण संघ में शामिल किया।

महावीर ने धरा पर ज्ञान और सम्यक्त्व का आलोक विकीर्ण किया। उनका जीवन सार्थक था वे धीरे-धीरे जीवन-लक्ष्य निर्वाण की ओर बढ़ते गए और आज के बिहार राज्य तथा उस समय के मगध राज्य के नगर पावापुरी में वह दिन भी आ गया, जब वे जीवन-सिद्धि निर्वाण को प्राप्त होते।

अन्तिम दिन देवराज इन्द्र ने भगवान से प्रार्थना की - ''प्रभो ! अपनी आयु कुछ और बढ़ा लीजिए।''

भगवान ने कहा -

''देवराज ! अपनी आयु का एक क्षण बढ़ाना या घटाना असंभव है। मेरा जीवन-लक्ष्य पूर्ण हो चुका है।''

यह कह भगवान ने नश्वर शरीर छोड़ दिया। उनकी आत्मा मोक्ष को प्राप्त हुई। वे सिद्ध हो गए। जन्म-मरण से मुक्त होकर निर्वाण को प्राप्त हुए भगवान महावीर ।

देवराज ने घोषणा की -

''यह समय रोने-धोने या शोक करने का नहीं है। बार-बार मरना और बार-बार जन्म लेना शोक और हर्ष का कारण है। पर भगवान का निर्वाण तो हर्ष-शोक दोनों से परे है। निर्वाण ही तो जीवन का चरम लक्ष्य है। निर्वाण हर्ष का पर्व है, ज्योति का पर्व है, मुक्ति का पर्व है। भगवान का निर्वाण आज कार्तिक अमावस्या की रात्रि को हुआ है। आज से यह रात्रि दीपों की रात्रि होगी। जाओ, घर-घर दीप जलाओ।''

यह कह देवराज ने स्वर्ग और धरा दोनों स्थानों पर मणियों के दीपों की माला जला दी । वह पर्व दीपावली हो गया। तभी से दीपावली मनाने की परम्परा चलने लगी।

जीवन सन्देश

दीपावली हमें कुछ सन्देश देती है। हम अपनी इस पावन परम्परा के खोखलेपन को मिटाकर उसकी लकीर पीटना छोड़ें और कुछ सार्थक निर्णय लें। कुछ दीप जलाकर आतिशबाजी फूँकें, लक्ष्मी-पूजन करें, बहीखाते पूजें, यह सब तो परम्परा की लकीर पीटना है। जबकि आवश्यकता है आज हम टूटे हृदयों को जोड़ें, प्यार का वितरण करें, अपनी सामर्थ्य भर दूसरों का दुःख दूर करें, अपने धन से दूसरों को सुख दें, मिथ्यात्व को मिटाने में जिनवाणी का सतत अनुसरण करें। अपने हृदय का अन्धकार मिटाकर दूसरों को भी धर्म शिक्षा दें, यही है दीपावली का पावन सन्देश। ●

प्रकाश के प्रसार का पर्व : दीपावली

लेखक : प्रवर्तक श्री सुभद्रमुनिजी म. सा.

दीपावली भारत का सबसे प्रसिद्ध सांस्कृतिक त्यौहार है। कार्तिक माह की अमावस्या तिथि को यह त्यौहार भारत में तथा विश्व के कई देशों में उत्साह एवं उमंग के साथ मनाया जाता है।

जैन परम्परानुसार - इसी तिथि को भगवान महावीर अनादिकालीन जन्म-मरण के प्रवाह को पार कर देह-मुक्त होकर मोक्ष को उपलब्ध हुए थे। भगवान महावीर के निर्वाण को कल्याणकारी मानकर देवलोक के इन्द्रों एवं देवताओं ने मणिमय दीप जलाकर तथा भूलोक पर अनेक राजाओं व सामान्य जनता ने मृणमय दीप जलाकर कार्तिक अमावस्या की उस रात्रि को प्रकाशित कर प्रभु के प्रति अपनी भक्ति एवं भाव को प्रकट किया था।

अन्यान्य परम्पराओं में भी अनेक कथानक इस तिथि से जुड़े हुए हैं। मूल तथ्य यह है कि दीपावली - अंधकार पर प्रकाश, असत्य पर सत्य, हिंसा-अनाचार पर अहिंसा-सदाचार की विजय का प्रतीक पर्व है। श्रीराम चौदह वर्षों तक वन में रहे। वन के कष्टों के दौरान उन्होंने ऋषियों, तपस्वियों और सदाचारी लोगों को भय-मुक्त किया। श्रीराम का यह पराक्रम अन्धकार पर प्रकाश की विजय का ही उपक्रम है।

भगवान महावीर ने अपनी आत्मा के भीतर छिपे अज्ञान-अन्धकार को दूर किया। समता और क्षमा से उन्होंने आत्मा के शत्रुओं को परास्त किया। आत्मा पर आवृत्त अज्ञान व मिथ्यात्व के अन्धकार को उन्होंने ज्ञान रूपी सूर्य से दूर किया।

वैदिक परम्परा में दीपावली है - **तमसो मा ज्योतिर्गमय।** अंधकार से प्रकाश की ओर आना। जैन परम्परा में तीर्थंकर महावीर का स्मरण कर आत्मा की उपासना की जाती है। इतर परम्पराओं में भी विविध विधियों से उपासना के विधान हैं।

दीप-प्रज्वलन एक भौतिक परम्परा है। जैन धर्म इस पर्व के आत्म-पक्ष को स्पर्श करने को कहता है। जीवन में रही हुई बुराइयों, त्रुटियों, व्यसनों के अंधकार को ज्ञान का दीप जलाकर सम्यक् पुरुषार्थ द्वारा उसे दूर करना चाहिए। **'अणाणं परियाणामि, णाणं उवसंपज्जामि'** - मैं अज्ञान को छोड़ता हूँ और ज्ञान के प्रकाश में आता हूँ।

अप्पदीपो भव! तथागत के इस वचन के अनुसार हमें स्वयं को दीप बनाना है। भीतर का दीप मिट गया तो बाहर का अन्धकार स्वतः मिट पाएगा। सभी का मत है अज्ञान का मिटना ही दीपावली है।

इस श्रेष्ठ त्यौहार से कुछ ऐसी बातें जुड़ गई है, जो जीवन और पर्यावरण के प्रतिकूल हैं। आतिशबाजी करना, बम फोड़ना आदि - इनसे पर्यावरण दूषित होता है। कितने ही लोग प्रदर्शन के लिए फिजूल खर्च करते है, ये परम्पराएँ एवं प्रदर्शन अनुचित है।

'दीपावली' उत्सव और उल्लास का पर्व है। दूसरों में उल्लास बाँटकर इस पर्व को मनाएँ। अभाव से ग्रस्त समाज के निर्धन लोगों में उत्सव जगे, ऐसा कुछ उपक्रम कीजिए। यह कैसे सम्भव है?

देखा जाता है कई सम्पन्न लोगों के यहाँ मिठाईयाँ सड़ती रहती हैं, फिर उसे कूड़ें में फैंकते हैं। दूसरी ओर कितने ही लोग तरसते रहते हैं। इस असंतुलन के अन्धकार को दूर करने का प्रयास करना चाहिए, बाँटकर खाना चाहिए।

अभावों में सद्भावों का दीप जलाएँ, खुशियाँ बाँटे! उल्लास का वितरण करें।

वेद का एक शिक्षा - सूक्त है - 'शतहस्त समाहर सहस्रहस्त संकिर' अर्थात सौ हाथों से कमाओ और हज़ारो हाथों से बाँट दो। बाँटने से उत्सव हजार गुना होकर पुनः बाँटनेवाले को प्राप्त होता है, दीपावली पर्व पर आत्म-सूक्त बनाएँ। इस बार आप ऐसी ही दीपावली मनाएँ और आनन्द का अनुभव करें।

सर्वत्र मंगल का वर्षण हो! आत्मा में आन्तरिक उल्लास के दीप जलें। समरसता की सरस्वतियाँ कल-कल करती हुई बहती रहें! इन्हीं सदाशाओं के साथ स्वस्ति! ●